मेरे तेरे उसके किस्से

(लघुकथाएं)

जसेकला

मेरे तेरे उसके किस्से

(लघु कथाएं)

जसेकला

लेखक :जसेकला

संपर्क : email : jasekla@gmail.com

कापीराइट मुक्त किताब

प्रथम संस्करण : मार्च 2017

सहयोग राशि:

टाइपिंग:

शब्द संयोजन:

प्रूफ रीडिंग:

आवरण :

प्रकाशक : लोक सेवक संस्थान , बरवाला (मुजफ्फफरनगार) - 251001(उ. प्र.)

अपनी बात

हमारी रोजाना की जिंदगी में किस्से भरे रहते हैं बस हम हमें उन्हें या तो राजेमर्रा की बात ही समझ कर छोड़ देते है या फिर लिखने में आलस करते रहते हैं । कुछ छोटी कहानियों का यह नन्हां गुलदस्ता पेश हैं : *मेरे तेरे उसके किस्से*

समर्पित
उन बच्चों को
जो मुझे
नये किस्से सुनाते हैं
और विषय सुझाते हैं

अनुक्रम		
#	**शीर्षक**	**पृष्ठ**
1	स्कूल में एडमिशन	6
2	टिफिन	7
3	सीट पर कोई और बैठ जायेगा	8
4	सड़क खराब है	9
5	महीने के दो पक्ष	10
6	पानी का ठेला	11
7	ट्यूब लाइट	12
8	मोबाइल के डिलीटिड फोटो	13
9	भगवान मेरी जेब में	14
10	मेहमाननवाजी	15
11	तीन दो पांच	16
12	बेटे का क्लासमेट	17
13	कुकुरनुचवा यानी बुफे सिस्टम	18
14	हरी बॉल	19
15	भगवान जी सो रहे हैं	20
16	बच्चा और पिल्ला	21
17	अंकुर आदित्य श्री	22
18	मार्कशीट	23
19	एक ही बर्थडेट वाले बुआ भतीजे	24
20	एक मुसाफिर तीन सफर	25
21	मौसम बदलने की वजह	26
22	योग और उद्योग	27
23	वैराग्य	28
24	मौत पर बरसात	29
25	मास्टर आफ सोशलवर्क	30
26	वैरी बिजी फैमिली	31
27	कपडों की सफाई	32
28	इंटरकास्ट मैरिज	33
29	संबंध और बंधन	34
30	छब्बीस जनवरी	35
31	मेरे एक दोस्त की रोजकथा	36
32	ऑफिशियल टूर	37
33	पूरी हाजिरी	38
34	टोपी का आंदोलन	39
35	पांच साल केजरीवाल	40
36	अलग अलग मापदंड	41

स्कूल में एडमिशन

अबरार जब भी ज्यादा शरारत करता तो उसकी मां (जो अलीगढ़ के एक स्कूल में प्रिंसिपल थीं) उसे डराने के अंदाज में कहती - " स्कूल में एडमिशन करा दूंगी। पढ़ाई में अक्ल ठिकाने आ जायेगी सब शरारत निकल जायेगी । "

बच्चे ने एक दिन मां को अच्छे मूड में देखकर उससे पूछा – ' मम्मी पढ़ाई कब खत्म होती है ? ' मां बोली- " जब शादी हो जाती है। " यह सुनकर वह बड़ी मासूमियत से बोला – 'फिर ठीक है , जिस दिन स्कूल में मेरा एडमिशन कराओ उसी शाम को मेरी शादी कर देना। '

टिफिन

वह रोज अपने टिफिन में मैडम की बताई हुई चीजें लेकर स्कूल जाता । स्कूल से घर वापस आते ही मम्मी को बता देता कि कल मुझे मैडम ने यह चीज लेकर आने को कहा है ।

एक दिन मैंने उससे पूछा - " कितने बजे खाते हो टिफिन ? " तो वह बोला – ' जब मैडम को भूख लगती है वह घंटी बजा देती है । और हम सब बच्चे भी टिफिन खोल लेते हैं।'

सीट पर कोई और बैठ जायेगा

उसने अभी स्कूल जाना कुछ महीने पहले ही शुरू किया था । एक दिन सुबह उसकी बुआ ऑफिस जाने में लेट हो गई तो बच्चा बोला- 'जल्दी जाओ नहीं तो तुम्हारी सीट पर कोई और बैठ जायेगा।'

सड़क खराब है

एक छोटा बच्चा साइकिल पर बाजार से कुछ सामान लेकर अपने घर की तरफ लौट रहा था। शाम का समय था - थोड़ा सा अंधेरा हो गया था । साइकिल टेढ़ी मेढ़ी चल रही थी । वह बच्चा मुझसे कई बार टकराता-टकराता बचा । मैंने गुस्से में कहा - क्या तुम्हारा दिमाग खराब है ! बच्चे ने सहजता से जवाब दिया – " नहीं अंकल मेरा दिमाग भी ठीक है , यह साइकिल भी ठीक है पर सड़क खराब है। " वाकई वह बच्चा सही कह रहा था - सड़क में कई जगह गढ्ढे थे ।

महीने के दो पक्ष

मैं एक कपड़े की दुकान पर बैठा था । जब मैने पूछा कि काम कैसा चल रहा है तो दुकानदार बोला - आजकल तो कृष्ण पक्ष चल रहा है । जब मैंने उससे कहा कि अभी पांच दिन पहले ही तो अमावस गई है तो वह दार्शनिक अंदाज में बोला - पर महीने का अंतिम हफ्ता जो है, भई हमारा शुक्ल पक्ष तो महीने के शुरूआती दिनो में ही रहता है जब लोगों को तनख्वाह मिलती है।

पानी का ठेला

गर्मी की एक दोपहर में मैं दिल्ली के जंतरमंतर पर घूम रहा था। भूख लगी हुई थी-, इसलिये वहीं खोमचेवाले से लेकर दो कुलचे खाए और पास में खड़े पानी के ठेले पर गया तो देखा कि ठेले वाला भी खाना खाकर पानी पी रहा था पर बोतल से, जब मैनें पूछा कि अपने ठेले की मशीन का ठंडा पानी क्यूं नहीं पीते तो वह बोला -'' बाबू जी बहुत महंगा पड़ता है इसलिये अपना रोटीपानी घर से लेकर - चलते हैं।''

ट्यूब लाइट

घर की एक ट्यूब लाइट खराब हो गई । मैं उस वक्त इंजीनियरिंग के दूसरे साल में पढ़ रहा था । जब बड़ी बहन ने प□ाई का हवाला देकर मुडो थोड़ा उकसाया तो मैं टैस्टर वाला पेचकस लेकर चैक करने लगा । कुछ पता न चला तो मैंने कह दिया सरकिट में कुछ खराबी है और इसको सही करने के लिए बाजार से इलेक्ट्रीशियन को बुलाना पड़ेगा । जब मैं शाम को घूमकर घर वापिस आाया तो कमरा रोशनी से चमक रहा था। मेरे पूछने पर बहन ने बताया मां ने ही उसे ठीक कर दिया था । रसाई से आवाज आई - आखिर दो-दो इंजीनियरों की मां हूं और रोटी भी बना ही लेती हूं वैसे कपड़ा सिलना भी मुझे बहुत अच्छे से आता है ।

मोबाइल के डिलीटिड फोटो

मोबाइल में बहुत सारे फोटो पड़े हुये थे । छोटू ने खेलते हूए कोई बटन दबा दिया और वो एक फोल्डर उड़ गया । उसकी मम्मी ने उसे बहुत मारा । मुझे उस वक्त न्यूटन वाली कहानी याद अय गई जिसमें उसके कुत्ता डायमंड के मेज पर चढ़ने से लैंप पलट गया था और सारे कागजों में आग लग गई। न्यूटन ने बस इतना कहा था - ‘ अरे ओ डायमंड, तूने आज जो नुकसान किया है वह तू नहीं जानता कि कितना बड़ा है और दोबारा अपने रिसर्च के काम में लग गया ।‘

भगवान मेरी जेब में

आज सुबह मैं नाश्ते के लिए ऑफिस के सामने वाले पटियाली □ाबे पर बैठा था । □ाबे का मालिक काम भी करता जा रहा था और बैक-ड्राप में वाहिगुरू का जाप चल रहा था । जब उसने पैंट की पीछे वाली पाकेट से मोबाइल निकाला तो पता चला कि 'दुनिया मेरी मुठठी में 'से टैक्नोलोजी काफी आगे बढ़ गई है। अब भगवान दिल में नहीं जेब में रहता है ।

मेहमान नवाजी

एक अफसर चाय बहुत पीते थे । जब भी कोई उनसे मिलने आता अपने चारासी को चाय बनाने को बोल देते । चपरासी साहब की इस आदत से तंग आ चुका था । उसने काफी सोच समझ के बाद एक फैसला लिया । साहब के कप में तो वह बढ़िया चाय डालता पर बाकी लोगों के प्यालों में नमक मसाले जैसा कुछ मिला देता । साहब संवक को खुश रखने के लिए चाय की क्वालिटी की तारीफ करते और मेहमान चाय के बारें में साहब से कुछ बोल नहीं सकते थे । अब जब साहब चाय मंगाने को कहते तो लोग बहाना लगाकर अक्सर मना कर देते कि सुबह से बहुत चाय हो गई या फिर हमने चाय पीना कम कर दी है । अरविंद भारत ने भी ऐसी ही कुछ बात किसी दोस्त के घर की बताई थी जिसकी पत्नी पति के समाजसेवी मित्रों के घर आने पर परेशान होती थी और सब्जी में ज्यादा नमक डालकर उसे कड़वा बना देती थी ।

तीन दो पांच

लंच करने के बाद मैं आफिस की छत पर टहलने गया । वहां कुछ लोग धूप सेंक रहे थे और एक कोने में ताश भी खेले जा रहे थे । मैने पूछा तो उन्होने बताया साहब कुछ नहीं बस टाइमपास के लिए तीन-दो-पांच खेल रहे हैं । जब मैंने इस खेल की अपनी जानकारी बावत बताया तो एक ने दार्शनिक टोन में कहा ठीक ही बात है । तीन दो पांच में छोटे पत्तो और लोगों का क्या काम । वैसे कई बड़े साहब लोगों को मैंने कम्प्यूटर पर अक्सर *सॉलिटेयर* खेलते हुए देखा है ।उन्होंने ताश खेलना तो रोक दिया पर नौ दो ग्यारह नहीं हुए ।

बेटे का क्लासमेट

बेटे ने हॉस्टल से फोन किया -"पापा मेरा दोस्त भी आ रहा है। कुछ दिन दिल्ली में साथ रहेगा। " । पापा ऊँचे ओहदे के सरकारी अफसर थे। उन्होंने जवाब दिया -"ठीक है बेटा , रेस्ट हाउस बुक करा देंगे - तुम भी उसके साथ रह लेना। "

वह मम्मीपापा की इकलौती संतान था जो बड़े सरकारी बंगले में रहते थे।

कुकुरनुचवा यानी बुफे सिस्टम

- जैसे ही खाना लगता है सब झपट पड़ते हैं ।
- लाइन में थाली लेकर लगना पड़ता है ।
- उसी प्लेट में नमकीन-मीठा , रसीला-सूखा , रोटी-चावल सब मिक्स हो जाता है ।
- घूमघूमकर लोग खाना खाते हैं ।
- खडे-खड़े ही खाना पड़ता है
- झूठी प्लेटों में लोग उन्हीं चमचों से खाना डालते रहते हैं ।
- नानवेज-वेज सब वहीं पकता और सजा रहता है ।
- पानी के लिए बीच में दौड़ना पड़ता है ।
- जो व्यंजन अच्छा बना हो वह जल्दी खत्म हो जाता है ।
- परोसने वालों में कोई आत्मीयता नहीं होती ।
- कोई प्यार से नहीं पूछता एक पूरी और ले लो ।

हरी बॉल

एक छोटा बच्चा मुझे अपनी हरी टी-शर्ट दिखाकर बता रहा था कि सब उसकी ड्रेस की बहुत तारीफ कर रहे थे । दरअसल वह किसी धार्मिक कार्यक्रम में अपने मम्मीपापा के साथ गया था और वहां लोग हरिबोलहरिबोल के नारे लगा रहे थे । कल जब उसे खेलने के लिए हरी बॉल भी मिल गई तो - वह और खुश हो गया ।

भगवान जी सो रहे है

मई महीने की तेज धूप थी। मंदिर के पट बंद थे। गली में बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे । अचानक गेंद उछलकर मंदिर में आ गई। पुजारी जी सो रहे थे और गेंद आने की अवाज से उनकी नींद टूट गई और वे झल्लाकर बोले -" क्यों शोर मचा रखा है ---भगवान जी सो रहे है ------" !

बच्चे चुप हो गए बड़ो का कहना तो आखिर छोटों को मानना ही पड़ता है ।

बच्चा और पिल्ला

मालकिन अपनी महंगी कार की पाछे वाली सोफेनुमा सीट पर बैठी थी । उसकी गोद में विदेशी नस्ल का अजीब सी शक्ल वाला पिल्ला था । उसका अपना बच्चा ड़ाइवर के साथ सामने वाली सीट पर बैठे नौकर की गोद में था ।

अंकुर आदित्य श्री

एक बच्चे से मैंने पूछा - तुम्हारे पापा कहां हैं तो वह बोला : मनोज आया था .....उसके साथ जालंघर गये हैं। मैंने जब उसे समझाया कि बड़ों के नाम के आगे श्री लगाते हैं तो वह बोला - अच्छा मनोज श्रीआया था उसके साथ जालंघर गये हैं। मुझे लगा कि वह कुछ समझ तो गया है फिर जब मैंने चैक करने के लिए उससे पूछा कि - तुम्हारे पापा का नाम क्या है तो वह बोला . अम्बर श्री । मुझको हंसी आ गई ओर मैंने जब मम्मी और छोटे भाई का नाम पूछा तो वह गंभीरता से बोला - नैना श्री ओर अरनव श्री । उस नन्हें बच्चे ने अपना नाम अंकुर आदित्य श्री बताया ।

मार्कशीट

जब अबरार की पहली क्लास का रिजल्ट आया तो उसके नंबर ज्यादा अच्छे नहीं आये। मां ने उसे कहा -'' शादी के लिए मार्कशीट देखते हैं। अच्छे नंबर लाया करो। ''

बच्चा बोला –' ऐसा करना मम्मी , मेरी वो केजी वाली मार्कशीट लैमीनेट कराके रख लो वही दिखाना, बाकी फेंक देना।'

एक ही बर्थडेट वाले बुआ-भतीजे

भतीजा - बुआश्री आप कितने साल के हो गये आज ?

बुआ- प्यारे भतीजे ! *औरतों से उनकी उम्र नहीं पूछते ।*
भतीजा - चलो यह तो बता दो कि आप मुझसे कितनी बड़ी हो ?

बुआ - ओके भतीजे , सुन ये गणित

दो साल पहले मैं तुझसे नौ गुनी थी
दो साल बाद पांच गुनी रह जाऊंगी
दस साल बाद तीन गुनी रह जाऊंगी
छब्बीस साल बाद दो गुनी रह जाऊंगी
पर रहूंगी भतीजे मैं तुझसे हमेशा ही बड़ी !

(38,6)

एक मुसाफिर - तीन सफर	
1	रात का वक्त था । उसके पास टिकट नहीं था । वह टीटीई से लेने-देने की कुछ बात कर रहा था । उनकी सैटिंग हो गई । न तो रसीद बनी न ही कोई टिकट - पर उसको पूरी सीट मिल गई । वह खूब चौड़-फैल कर बर्थ पर आराम से सो गया । पूरे सफर में टीटीई ने उसका पूरा ध्यान रखा ।
2	सुबह का वक्त था । वह एसी कोच में ट्रैवल कर रहा था और कोच अटैंडेंट से बहस कर रहा था । पूछने पर पता चला कि उस मुसाफिर ने कोच अटैंडेंट से स्लीपर में बैठे अपने रिश्तेदार के लिए रात को कम्बल मांगा था और अब अटैंडेंट उससे सौ रूपये मांग रहा था जबकि वह सिर्फ पचास रूपये देने को राजी था । वैसे इस तरह सी कोच से स्लीपर कोच के लिए कंबल लेना और देना दोनों ही गैरकानूनी था ।
3	दोपहर का वक्त था । उसका रिजर्वेशन कन्फर्म था पर उसने बुकिंग दलाल से कराई थी । वह लंच और चादर की क्वालिटी को लेकर परेशान था । उसने कोच-अटैंडेंट को शिकायत पुस्तिका लाने के लिये कहा । सहमा हुआ अटैंडेंट बोला – " नमस्ते साहब ! क्या गलती हो गई हमसे ? आप क्यूं नाराज हो ? हम तो आपके सेवक है । " इतने में टीटीई भी आ गया और पान चबाते हुए बोला - " श्रीवास्तव जी कैसे हैं - शायद आप हमें पहचाने नहीं । " और उस आदमी ने शिकायत पुस्तिका में कुछ लिखे बिना ही पैन वापिस अपनी जेब में रख लिया । उसे अपने उस रात के बेरसीद और बेटिकट सफर की याद आ गई ।

मौसम बदलने की वजह

ट्रेन में बैठे कुछ लोग साल-दर-साल मौसम में आ रहे बदलाव पर बातें कर रहे थे : कभी भी बरसत होने लगती है, गर्मी ज्यादा पड़ती है , ठंड देर से पड़ती है , कहीं भी अचानक बाढ़ आ जाती है ।

गांव वाला भोलाभाला व्यक्ति बोला - कुदरत के साथ छेड़खानी करोगे तो यही होगा ।

तिलकधारी पंडित जी बोले- सब भगवान की लीला है !

और पास में बैठा पढ़ालिखा राष्ट्रभक्त बोला - यह सब बाहरी ताकतों की साजिश है अलनीनो और वैसटर्न डिसटरबेंस (अलकायदा और पश्चिमीकरण की तरह).

योग और उद्योग : पतंजलि के अष्टांग

1. यम का मंजन
2. नियम का अंजन
3. आसन का साबुन
4. प्रत्याहार का पाउडर
5. प्राणायाम का तेल
6. धारणा की अगरबत्ती
7. ध्यान का बिस्कुट
8. समाधि का चूरन

आज 21 जून को स्पेशल डिसकाउंट।

वैराग्य

मेरी बेटा दसवीं में पढ़ता है । उसके बहुत सारे ख्वाब हैं या फिर यूं कहूं कि कुछ दिन पहले तक थे। दरअसल वह पिछले हफ्ते दोतीन बड़े लोगों से मिला । एक सरकारी अफसर जो रिटायरमेंट की दहलीज पर है पर आज भी नेताओं और अपने बड़े अफसरों की चापलूसी करते दिखे । एक डॉक्टर जो सिर्फ पैसा कमाने की मशीन बन गये थे और अपनी सेहत गंवा रहे थे । और उन वकीलों की तो बातं वह सुनता पढ़ता रहता ही है जो मोटी फीस पाने के लिए स्वस्वीकृत अपराधियों की पैरवी करने के लिए राजी हो जाते है । अब न वह क्लैट में जाना चाहता है न JEE में में उसका जी बन रहा है । मेडिकल से तो उसे नफरत ही हो गई है । क्या करेगा पता नहीं पर उसे बुद्ध जैसा कुछ वैराग्य हो रहा है । इसलिए परेशान हूं क्यूंकि मैने आपी सारी उम्मीदे अपने इसी इकलौते बेटे पर टिकी हुई हैं जो दो बेटियों के बाद बड़ी मुश्किल से पैदा हुआ । वही मेरा आधार था और मैं तो उसकी वजह से ही नौकरी में घिसट रहा हूं जबकि सच तो यह है कि सब बेकार है । मुझे अपने से ज्यादा उसकी फिक्र है कि कहीं वह जंतरमंतर के रास्ते पर न निकल पड़े ।

मौत पर बरसात

एक बूढ़े व्यक्ति की मौत हो गई । उस दिन बरसात होने लगी ।

बेटा बोला - "मेरे डैडी कितने बढ़िया आदमी थे - देखो देवता भी रो रहे हैं !"

बगल में ही बैठे दामाद बोले - 'नही साले, वो तो खुश हो रहे हैं ।'

मास्टर आफ सोशलवर्क /

एनजीओ में नई नौकरी पर लगी युवती ने झुग्गी में जाकर बच्चों से पूछा -" बेटा क्या तुम सारा दिन कचरा बीनते रहते हो – स्कूल नहीं ।

एक छोटे बच्चे ने जवाब दिया -" रहने दो मैडम , मोबाइल से जल्दी जल्दी हम लोगों की फोटो खींच लो और अपने रास्ते आगे बढ़ो । हमें भी अपनी रोटी कमाने दो। "

वैरी बिजी फैमिली

नौकर रसाई में खाना बना रहा था।

बच्चा टीवी पर कार्टून देख रहा था ।

मैडम फेसबुक पर चैटिंग कर रही थी ।

साहब मोबाइल पर गायत्रीमंत्र लगाकर ध्यान में लीन थे ।

सब अपने अपने काम में व्यस्त और मस्त थे । मैं उनके घर अनचाहा मेहमान था ओर और चुपचाप बैठा अखबार पलट रहा था ।

कपड़ों की सफाई

पत्नी ने पति से कहा - " जरा उस छत पर सूख रहे पड़ोसिन के कपड़े तो देखो - कितने गंदे लग रहे हैं। " पति ने हामी भरी किन्तु अपनी छत पर जब वो धूप सेंकने गए तो उन्हें वे कपड़े उतने गंदे नहीं लगे।

अगले दिन सुबह उन्होंने अपनी खिड़की का शीशा साफ किया तो देखा कि उस पर बहुत धूल जमी हुई थी । आज पत्नी ने पति से कहा - " जरूर कल किसी ने पड़ोसिन को टोका होगा , आज कपड़े कुछ साफ धुले लग रहे हैं । "

इंटरकास्ट मैरिज

आईआईटी से उसने बीटेक की थी और मंडल कमीशन लागू होने के बाद अचानक वह 1991 में सामान्य से असामान्य लिखाई में अच्छा और मेहनती था ही -हो गया था । चूंकि वह प□ाई (ओबीसी) उसे आरक्षण का तनिक सहारा जो मिला तो उसका कैरियर और निखर गया । वह आईएएस में गया । प्रोबेशनरी ट्रेनिंग के दौरान ही उसे एक ब्राहमण लड़की से प्यार हो गया । लड़ सलेक्ट होकी के घरवाले राजी न हुए और उन दोनों ने खुद ही शादी करने का फैसला कर लिया । काफी सालों तक दोनो के परिवारजनों का मिलनाजुलना औपचारिक ही रहा ।

उस दमपत्ति को दो संताने हुईं और जब बेटे को स्कूंल भेजने का वक्त आया तो पति ने प्रस्ताव रखा - ' हम अपने बेटे को सामान्य कैटेगरी में रखें तो ठीक नहीं रहेगा !' पत्नी को उन्होने गैससब्सिडी को वाल्युंटरी छोडने वाली दलील देकर और सुप्रीम कोर्ट की क्रीमीलेयर वाला फैसला (अपनी मर्जी से) बताकर खूब समझाया । पत्नी भी संशय में पड़ गई ।

लड़की के पिता भी सरकारी अफसर थे सो उसने सलाह लेने के लिए उनसे बात की तो ससुर जी ने दामाद को समझाया बच्चे की जाति अपनी ही लिखवायें " -, आप दोनों आईएएस हैं और यकीनन बच्चा भी होनहार ही निकलेगा पर आने वाले समय में कम्पटीशन तो ब□ेगा ही । भगवान न करे कुछ नम्बर की कमी वमी रह गई और बच -्चे की मेरिट बिगड़ गई तो पछतावा करोगे । आइडियल सोच से जिंदगी नहीं चलती , थोड़ा प्रैक्टीकल बनो । "

तीन साल बाद जब छोटी बच्ची के एडिमशन की बारी आई तो पूरे परिवार में कोई कन्फयूजन नहीं था ।

संबंध और बंधन

उसकी पत्नी बीमार है , बच्चे का कल इम्तहान है । उसकी ड्यूटी साहब के बंगले पर रहती है । वह एक भी छुट्टी नहीं ले सकता क्यूंकि इसी हफते उसके प्रमोशन का फैसला होना है । आज सुबह जब पत्नी ने उसे घर की तकलीफों के बारे में कहा तो वह तुनककर बोला :" तुम लोगों के लिए ही तो यह सब कर रहा हूं , मैडम के घर का झाड़ूपोंछा करूंगा तभी तो साहब की कलम ठीक चलेगी । " संबंध के लिए वह बंधन निभा रहा है । अपने घर की खातिर साहब के घर की ठीक से देखभाल कर रहा है ।

छब्बीस जनवरी

परेड में राज्य की सांस्कृतिक की झांकी निकल रही थी । सब मस्त थे । हाथियों पर सजे धजे आर्मी के जवान बैठे थे । बैंड पर *सारे जहां से अच्छा गीत* की मधुर धुन बज रही थी । दर्शक तालियां बजा रहे थे और परेड के विशिष्ट अतिथि सलामी ले रहे थे । हाथी की लीद साफ करता हुआ भारतीय गणतंत्र का एक गरीब आदमी भी परेड में सबसे पीछे धीरे-धीरे कदमों से चल रहा था ।

मेरे एक दोस्त की रोजकथा

मेरी श्रीमती जी मुझसे बहुत खुश हैं और मैं भी । उनकी खुशी ही मेरा लक्ष्य है और मेरा सारा समय उनके लिये ही तो है । सुबह ऑफिस के लिए घर से जल्दी निकल जाता हूं , शाम को देर से घर लौटता हूं और रात को ऑफिस की कुछ फाइलें निपटा लेता हूं । इसके बाद थक कर सो जाता हूं पर गहरे से सोचो तो अपना सारा समय तो श्रीमती जी को खुश करने में ही तो बीतता है ।

ऑफिशियल टूर

बॉस ने झुंझलाकर उसे फोन किया - 'अरे तुम्हारी ट्रेन तो आगरा होकर आयेगी 2 किलो पेठा लेते आना और हां थोड़े से पेड़े भी ले लेना मथुरा से और ..... तुमने नागपुर से संतरे तो पैक करा ही लिये होंगे । '

कर्मचारी ने कहा - "सर मैं सब मैंनेज कर लूंगा पर कल दफतर नहीं आ पाऊंगा। "

बॉस प्यार से बोले - 'कोई बात नहीं ड़यूटी एक दिन एक्सटेंड कर दूंगा , बस सामान जरा ठीक से ले आना । '

पूरी हाजिरी

मैं कल सुबह दिल्ली के अपने पुराने ऑफिस गया और जब मैंने चपरासी से पूछा कि आज तो काफी लोग छुटटी पर होंगें तो वह बोला नहीं : साहब आज और कल सरकारी दफतरों में फुल अटैंडेंस रहेगी , परसों दिवाली जो है । शाम को जब घरवापसी में कर्मचारियों को कंबल , ड्राईफूट के डब्बे और तरह - तरह के गिफ्ट पैक हाथ में पकड़े हुए में बस-ट्रेन की तरफ भागते हुए देखा तो बात समझ में आई ।

टोपी का आंदोलन

मैं ओर अरविंद दिल्ली के जंतरमंतर पर बैठे थे । चारों तरफ शोर मचा हुआ था - कहीं नारी आंदोलन में लग रहे नारे , कहीं पेंशनवालों की मांगों की आवाजें , कहीं पूर्वोत्तर के छात्रों का ' नीडो ' की मौत को लेकर धरना । अचानक नारंगी टोपी पहने हुए एक छोटा बच्चा हमारे पास आया । उसके हाथों में पर्चों की एक गड्डी थी । जब उसने वह पर्चा हमारी तरफ बढ़ाया तो मैंने कहा – ' हमें तो टोपी चाहिये।' बच्चा थोड़ा झिझका फिर मैंने दस रूपये का नोट निकाला तो उसने दांये बायें देखकर चुपके से टोपी उतारकर मुझे दे दी ! टोपी के एक तरफ लिखा था - संतरक्षा धर्मरक्षा और दूसरी तरफ लिखा था - बापू निर्दोष हैं । मैंने बच्चे से यूं ही पूछा – ' कौन हैं बापू ? तो वह बड़ी मासूमियत से बोला – " निर्दोष हैं । " मैंने फिर जोर देकर पूछा - कैसे लगते हैं बापू ? वह बोला – " आप जैसे ।" दरअसल मेरी लंबी दाढ़ी देखकर उसने ऐसा जवाब दिया । मैं मन ही मन सोचने लगा - सच में निर्दोष तो यह बच्चा है किंतु कितने बहुत सारे सीधे-सादे लोगों को इन तथाकथित संतों-गुरूओं ने भावुकता की टोपी पहना रखी है !

पांच साल केजरीवाल

दिल्ली के रामलीला मैदान से संवैधानिक की ईश्वरीय शपथ लेने वाली सरकारी रस्म का गवाह बनकर मैं जलसे की भीड़ के साथ वापस लौट रहा था । सड़क के बीचोंबीच बैठा एक अपाहिज भीख मांगते हुए आवाज लगा रहा था केजरीवाल जिन्दाबाद । मैं पहले तो आगे निकल गया फिर न जाने क्य -ा सोचकर वापिस मुड़ा और उसके हाथ में पांच का सिक्का देकर बोला बोलो आम आदमी जिंदाबाद । -- उसने एक बार के लिए तो मेरे बोल दोहराये पर थोड़ी देर बाद उसके मुंह से नया नारा सुनाई पड़ा पांच साल केजरीवाल।

अलग अलग मापदंड

पॉलीटिक्स में अगर कोई :झूठ बोले , तिगड़मबाजी करें , वायदे से मुकर जाये, दल बदले तो लोगों को अजीब नहीं लगता क्यूंकि उनसे इससे इतर उम्मीद भी नहीं होती है पर यदि यही बाते रिलीजन मे कोई थोड़ी सी करें तो उसे गलत माना जायेगा। इसी तरह बिजनेस में कोई : टैक्स चोरी करे , महंगा सामान बेचे , खराब क्वालिटी सप्लाई करे रिश्वत देकर कान्ट्रैक्ट हासिल करे तो लोग उसे उतना गलत नहीं मानेंगे क्यूंकि बिजनेसमैन ज्यादा प्रोफिट कमाने के लिए ऐसा करते ही हैं करेंगे ही पर नौकरी में इस (वो भी सरकारी) तरह की बातों को का अंश मात्र भी गलत माना जायेगा।

वैसे तो जीवन के किसी भी क्षेत्र में अनीति को सही नहीं ठहराया जा सकता और सभी को ईमानदारी व सच्चाई से अपना फर्ज निभाना चाहिए पर मापदंड और बैंचमार्क संस्था और समय के हिसाब से जहन में बन जाते है और उन पर ही हम किसी का मूल्यांकन करते है।